बी0 ए0, खण्ड–।।
अर्थशास्त्र (सम्मान)
पंचम पत्र

डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo.Com

प्रश्न– एक अर्थव्यवस्था में पूँजी निर्माण का अर्थ महत्व एंव उसकी प्रकियाओं को स्पष्ट करें।

उत्तर–संकुचित एंव सीमित अर्थ में पूँजी निर्माण से तात्पर्य एक भौतिक पूँजी स्टॉक को बतलाता है जिसमें मशीन, मशीनरी आदि शामिल है। वहीं व्यापक अर्थ में 'पूँजी निर्माण' से तात्पर्य उसमें सार्वजनिक स्वास्थ्य, दक्षता, शिल्प, दृश्यमान और अदृश्य पूँजी से युक्त गैर–भौतिक पूँजी या मानव संसाधन शामिल है।

"(Prof. Colin clark)" 'प्रो0 कोलिन क्लार्क' के अनुसार, 'पूँजीगत वस्तुएँ उत्पादन के उद्देश्य हेतु उपयोग की जानेवाली प्रजनन योग सम्पत्ति है। लेकिन पूँजी निमार्ण एक निश्चित समयावधि में पूँजी के मौजूदा स्टॉक के लिए किए गए शुद्ध जोड को संदर्भित करता है। इसीलिए यह माना जाता है कि पूँजी निर्माण में भविष्य में अधिक उपयोग योग्य वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए तत्काल खपत का बलिदान शामिल है, जबकि पूँजी वर्तमान उत्पादन वह वह हिस्सा है जो तुरन्त खपत होने के बजाय आगे के उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है। पूँजी निर्माण वास्तविक पूँजी भंडार को बढाने के लिए संदर्भित करता है जो स्पष्ट रूपसे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के स्तर को बढाने में मदद करता है। इसलिए पूँजी निर्माण की प्रकिया वास्तव में वर्तमान में उपलब्ध संसाधनों के एक हिस्से का विचलन है– जो भविष्य में उपयोग उत्पादन के संभावित विस्तार के लिए संभव है। वास्तव में यह केवल वास्तविक भौतिक सम्पति की वितीय परिसंपतियॉ जैसे–शेयर, बॉण्ड, मुद्रा नोट और बैंक जमापूँजी निर्माण में शामिल है क्योंकि वे अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को बढाते है। प्रो0 नर्क के अनुसार, पूँजी निर्माण का अर्थ है कि समाज आपनी उत्पादन गतिविधि की संपूर्ण जरूरतों को तत्काल उपयोग की जरूरतों और इच्छाओं पर लागू नहीं करता है, लेकिन इसका एक हिस्सा पूजीगत वस्तुओं पूँजी में उपकरणों और परिवहन को बनाने हेतु निर्देशित करता है। सुविधाएँ, संयंत्र और उपकरण–वास्तविक पूँजी के सभी विभिन्न रूप जो उत्पाद प्रयास की दक्षता को बढा सकते है।

'प्रो0 साइमन, कुजनेटस' के अनुसार, 'धरेलू पूँजी निर्माण में देश के भीतर निर्माण, उपकरणों और आविष्कारों के लिए न केवल परिवर्तन शामिल होगें, बल्कि अन्य व्यय भी मौजूदा भूमि पर उत्पादन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इसमें शिक्षा, मनोंरजन और भौतिक विलासिता की रूप रेखाएँ शामिल होगी जो व्यक्तियों के स्वास्थ्य और उत्पादकता में योगदान करती है और समाज के द्वारा सभी व्यय जो कि नियोजित आबादी के मनोबल को कम करने के लिए है।'

देश के आर्थिक विकास में पूंजी निर्माण का बडा ही महत्वपूर्ण स्थान है। पूजी निर्माण अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। 'प्रो0 नर्क के अनुसार, 'गरीबी का दुष्चक्र, पूंजी निमार्ण के माध्यम से विकसित देशों में आसानी से तोडा जा सकता है। पूजी निर्माणे उपलब्ध संसाधनों के पूर्ण उपयोग के साथ विकास की गति को बढाने में सहायक होता है। यह देश के राष्ट्रीय आय, उत्पादन और रोजगार के आकार में वृद्धि की तरफ जाता है। जिससे मुद्रा स्फीति और भुगतान के संतुलन की तीव्र समस्याएँ उत्पन्न होती है। आर्थिक विकास के क्षेत्र में पूँजी निर्माण का निम्नलिखित महत्व है:

1. आधारभूत संरचनाओं का विकासः सामान्यतया, विकासशील वेा भारत जैसे आर्थिक रूप से कमजोर देशों में आधार भूत संरचनायें भी प्रायः कमजोर होती है। ऐसे देशों में पूंजी संचय या पूजी निर्माण के द्वारा आधारभूत संरचनाओं को मजबूत बनाने में मददगार साबित होता है।
2. प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोगः पूंजी निर्माण की सहायता से देश प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग सरलतापूर्वक किया जा सकता है।
3. उत्पादन के नये तरीकों में उपयोगी (सहयोगी): एक पिछडे या विकासशील देश में पूँजी निर्माण की सहायता से उत्पादन के नये और आधुनिक तौर–तरीका अपना सरल होता है– इससे उत्पादन की मात्रा में कॉफी वृद्धि होती हैं।
4. मानव संसाधन का समुचित उपयोगः मानव संसाधन के गुणात्मक विकास में पूजी निर्माण की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। इससे लोगो के शिक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षण प्रशिक्षण, सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा, स्वतंत्रता और आर्थिक कल्याण सुविधाओं पर निर्भर करता है, जिसके लिए पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है। श्रम बल को आधुनिक उपकरणों की पूर्ति एंव जनसंख्या वृद्धि के साथ ही उत्पादन में वृद्धि करके संतुलन स्थापित करने में सहायक साबित होता है।
5. प्रौधोगिकी में सुधारः पूँजी निर्माण आर्थिक विकास के लिए अधिक पूँजी और आवश्यक वातावरण बनाता है। यह आधुनिक तकनीकी विकास के माध्यम से उत्पादन को बढाता है।
6. कृषि और औधोगिक विकासः आधुनिक कृषि और औधोगिक विकास में वृद्धि हेतु आधुनिक तकनीक, मशीन, कच्चे माल एवं विभिन्न प्रकार के हल्के एंव भारी उधोगों को अपनाने में पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रों का विकास पूँजी निर्माण के बिना कठिन है।
7. आर्थिक विकास की उॅची दरः सामान्यतः विकसित देशों की तुलना में पिछडे एंव विकासशील देशों में पूँजी की काफी कमी रहती है, और देश में उच्च आर्थिक विकास दर का मतलब होता है पूंजी निर्माण की उच्च दर।
8. विदेशी पूँजी पर कम निर्भरताः आर्थिक विकास की दर को बढाने में विकासशील एवं कमजोर देश विदेशी कर्ज के बोझ, व्याज, तकनीकि एंव कुशल वैज्ञानिकों पर अतरिक्त व्यय से दबा रहता है। देश में पूँजी बचत या पूँजी निर्माण से विदेशी कर्ज, सहायता एंव बोझ से बचा जा सकता है।
9. आर्थिक गतिविधियों का विस्तारः पूँजी बचत तथा पूँजी निर्माण की दर में जैसे–जैसे वृद्धि होती है वैसे–वैसे उत्पादनता की दर का देश में वृद्धि होती है। इससे अर्थव्यवस्था की गतिविधियों का विस्तार होता है। देश में पूँजी निर्माण से निवेश बढता है। देश में निवेश की मात्रा बढने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है– इससे क्रय की मात्रा में वृद्धि होती है– जो मॉग को बढाता है और मॉग उत्पादन को बढाता है और उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को प्रभावित करता है।
10. राष्ट्रीय आय में वृद्धिः देश में पूँजी निर्माण से देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि उत्पादन के विभिन्न साधनों को समुचित रूप से अपनाने और उसी के उत्पादक उपयोग से ही संभव है।
11. आर्थिक कल्याण में वृद्धिः पूँजी निर्माण से उनकी उत्पादकता और आय में अधिक वृद्धि से मानव के जीवन स्तर में व्यापक सुधार होता है– इससे काम की संभावना और आय में सुधार और वृद्धि होता है। इससे लोगों के कल्याण को बढाने में मददगार साबित होता है। इसलिए पूँजी निर्माण, गरीब देशों की जटिल समस्याओं का प्रमुख समाधान है।

अब हम पूँजी निर्माण के प्रमुख प्रकियाओं का वर्णन करें:

- बचत का निर्माण

- बचत का जुटान और
- बचत का निवेश

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर देश में पूँजी निर्माण, उसके महत्व एंव प्रमुख प्रक्रियाओं की आवश्यक जानकारी प्राप्त हो जाती है।